क्या आप जानते हैं ?

1. गुरुघासीदास जी के बाद गुरुबालक उतराधिकारी कैसे बने ?

2. तत्कालीन राजनैतिक परिघटनाएं की 1857 - राजनैतिक घटना क्रम क्या है?

3. इसके बाद बने प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन के किस निर्णय ने सतनामियों की स्थिति पर बुनयादी प्रभाव डाला ?

4. भूमि बंदोबस्त - मालिक मकबुजा कानून एवम संदर्भित विषय से सतनाम आन्दोलन पर निर्णायक प्रभाव -

5. गुरुबालक को “राजा गुरु” क्यों कहा जाता था ?

6. लोकदमनकारीयों द्‍वारा सतनाम आन्दोलन को दमित करने गुरुबालकदास की हत्या का षडयंत्र कैसे रचा गया ?

7. गुरुबालक की हत्या क्यों, किसने और कैसे किया? उस समय क्या गुरुघासीदास जिन्दा हो गये थे?

8. भीतरघाती कौन और कैसे? क्या वर्तमान में कथित गुरु परिवार के पूर्वजो के भी कहीं गुरु परिवार है? वे कहाँ और कैसे है?

9. गुरुबालक के बाद गुरु / प्रमुख बने / बनाये गये आगरदास क्या गुरुघासीदास के वंशज थे या नही?

10.सतनाम आन्दोलन-निति पर उनकी क्या भूमिका रही?

11.सफुरामाता एवम पवारामाता कौन थी? गुरुघासीदास से इनका क्या सम्बन्ध है?

12.गुरुबालक के पुत्र साहेबदास लम्बरदार क्यों नही? आगरदास कैसे?

13.क्या है परम्परागत कानून? संदर्भित अंतरंग कथा |

लोक समाज के रोटी व सम्मान के लिए शहीद हुए

सतनाम आन्दोलन

के महानायक

अमर शहीद गुरु बालकदास का

“बलिदान गाथा”

की पीडीएफ फाइल

जरुर पढे.



लेखक – साहेबश्री लखनलाल सुबोध‘कुर्रे’

(अध्यक्ष GVSS/ केन्द्रीय संयोजक GSS)

गुरुघासीदास जी के बाद गुरुबालक उतराधिकारी

गुरू घासीदासजी के देहावसान पश्चात सतनाम आंदोलन के नेतृत्वकर्ता कौन हो के प्रश्न पर सतनाम संगठन-समाज में विचार-विमर्श हुआ। चूंकि गुरूघासीदास ने व्यक्ति महत्ता के स्थान पर समाज महत्ता पर जोर दिया था। समाज में गंभीर चर्चा के बाद यह तय हुआ कि **सतनाम आन्दोलन** को चलाने में गुरूघासीदास के साथ समाज - संगठन के शक्ति निर्माण में उनके दिवतीय पुत्र बालकदास ने बराबर का साथ नेतृत्व प्रदान किया था. इसलिए उन्हें ही गुरू मुखिया बनाया जाय। समाज के नेतृत्व के लिए कार्य कुशलता तथा नेतृत्व क्षमता को ही आधार माना जाएगा। किसी वंश परंपरा को नहीं। यह निर्णय कार्यक्षमता के आधार पर लिया गया, किसी वंशानुक्रम के तहत नहीं।

गुरूबालकदास के नेतृत्व में सतनाम नीति - धर्म का जोर शोर से प्रचार हुआ। जैसा कि हम पूर्व पाठ में उल्लेख कर चुके हैं कि, सतनाम आदोलन से जहां प्रभुसत्ता वर्ग द्वारा पीड़ित लोकसमाज मजबूत होता गया। वहीं दूसरी और प्रभु वर्ग की लोकदमनकारी , ताकतें सतनाम आदोलन को कुचलने - तोड़ने तरह - तरह के प्रयास में लगे रहे। इन विवरणों के पूर्व हम उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों पर एक नजर डाल लेते हैं।

तत्कालीन राजनैतिक परिघटनाए –

नागपुर राज्य के शासक रघुजी तृतीय की लंबी बीमारी के बाद 11 दिसम्बर, 1853 में मृत्यु हो गई। ब्रिटिश रेजीडेंट मि.मिन्सल (जो उनकी मृत्यु के समय नागपुर में उपस्थित थे, ने केन्द्रिय सरकार के पास राजा की मृत्यु की सूचना प्रेषित किया। बहुत सारी घटना - परिघटना

के बाद इस राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में विलिन कर दिया गया) इस उल्लेखित अवधि में छत्तीसगढ़ के अंतिम मराठा सूबेदार गोपालराव आनंद थे। उन्होंने अपना शासन भार 1फरवरी 1855 ई. को ब्रिटिश डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स सी. इलियट को सौंप दिया | उनका अधिकार को ब्रिटिश क्षेत्र वही था, जो 1818 में मराठों की पराजय , और अंग्रेजों को विजय के बाद छत्तीसगढ़ में सूबेदार प्रथा के तहत मि. एगन्यू को था। हालांकि तब और अब में पारिस्थितियां बदली हुई थी। डिप्टी कमिश्नर को प्रशासन के कार्य में सहयोग देने के लिए एक सहायक कमिश्नर की भी नियुक्ति की गई। इसके सिवाय अतिरिक्त सहायक कमिश्नर की नियुक्ति प्रावधानिक था। जिसे मूल भारत निवासी के लिए आरक्षित रखा गया। इसी के तहत रायपुर में सूबेदार गोपलराव आनंद एवं बिलासपुर में मोईबुल हसन को सहायक कमिश्नर के रूप में नियुक्त किया गया।

इसी दरमयान सन 1857 में सैनिक गदर प्रारंभ हुआ (जिसे 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है) हालांकि इसे स्वतंत्रता संग्राम के रूप में सभी इतिहासकार नहीं मानते । दरअसल यह देशी राजाओं का अपने राज्य बचाने अंग्रेजों के खिलाफ सैनिक विद्रोह था। अंग्रेजी हुकुमत ने इसे तत्परता से असफल कर दिया। अंग्रेजो की ओर से सामान्य जनों के परिवारों से भर्ती हुए सैनिक जवानों के यथा - महार रेजीमेंट, सिक्ख रेजिमेंट, गोरखा रेजिमेंट आदि लड़े और अंततः ब्रिटिशों की जीत व देशी रजवाड़ों की हार हुई। इसकी विशद व्याख्या से बहुत सारे अर्थ - व्याख्या उद्धाटित होता है। लेकिन इसका यहां चर्चा करना विषयांतर हो जाएगा।

संक्षिप्त - इस घटनाक्रम का एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, 1857 के बाद भारत से ईस्ट इंडिया कपनी (ब्रिटिश सत्ता के लाइसेंस धारी कंपनी / सत्ता) को ब्रिटेन सरकार , ने हटाकर सीधे अपने हाथों में सत्ता ले लिया। इस राजनैतिक बदलाव से भारत में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। जिससे यहां की राजनीति, समाजनीतिक अर्थनीति में बुनियादी परिवर्तन हुआ। सन् 1857 में विद्रोह के दौरान विशेष परिस्थितियों से निपटने के लिए रायपुर के डिप्टी कमिश्नर को विशेष सर्वोच्च अधिकार प्रदान किए गए। उन्हें अपने क्षेत्र के बाहर की घटनाओं से भी निपटने का अधिकार दिया गया। छत्तीसगढ़ के डिप्टी कमिश्नर ने प्रथमत: प्रशासकीय

परिवर्तन के रूप में रजवाड़ों की सीमा परिवर्तन कर तहसीलदारी व्यवस्था का सूत्रपात किया। छत्तीसगढ़ को मुख्यतः तीन तहसीलों में रायपुर, धमतरी, रतनपुर में बांटा गया। प्रत्येक तहसील में एक-एक तहसीलदार नियुक्त किया गया। जो उस क्षेत्र का प्रमुख अधिकारी होता था। वे सीधे छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े अधिकारी डिप्टी कमिश्नर के निर्देशानुसार कार्य करता था। छत्तीसगढ़ के परगनों का नये सिरे से पुर्नगठन किया गया। यहां नायब तहसीलदार नियुक्त किया गया। यह पद भी भारतीय मूल के लोगों के लिए आरक्षित रखा गया। बाद में 1 फरवरी 1857 ई. में छत्तीसगढ़ के तहसीलों का पुर्नगठन कर उनकी संख्या तीन से बढ़ाकर पांच कर दी गई। वे थे-रायपुर, धमतरी, धमधा, नवागढ़, और रतनपुर बाद में दुर्ग को मी नया तहसील मुख्यालय बनाया गया।

इसी दौर में देशी राजवाड़ों - सामंतों एवं उनके पिट्ठूओं के षडयंत्र - सांठगांठ से अंग्रेजी हुकुमत ने वीरनारायण सिंह के लोक - राजसमाज को कुचलने का काम किया। वीरनारायण सिंह लोकसमाज के लिए संघर्ष करते शहीद हुए थे।

भूमि बंदोबस्त कानून एवं संदर्भित विषय से सतनाम आंदोलन पर प्रभाव -

अंग्रेजी शासन ने व्यवस्थित तौर पर राज-काज करने के लिए भूमि बंदोबस्त को नया स्वरूप प्रदान करने , नये आदेश प्रसारित किये | इसके पहले गाँवो का सीमांकन , भूराजस्व की अनियमितता एवं भूअधिकार कब्जा आदि सब कुछ अस्त - व्यस्त था। अंग्रेजों ने जमीनों पर काबिज लोगों की व्यवस्थित रिकार्ड रखने के लिए मालिक मकबूजा कानून लागू किया। इस कानून के अनुसार जो कादिम कास्तकार (पुराने काश्तकारों को जिन्हें कादिम काश्तकार , कादिम जोतदार एवं वंश परम्परागत काश्तकार कहा जाता था।) इस कानून में यह प्रावधानित था कि 1840 ई. से जो अपनी भूमि पर काश्तकारी करते थे। उन्हें पूर्ण स्वामित्व अधिकार अथति मालिक मकबुजाहक प्रदान करने का प्रावधान था। अब वे बंदोबस्त अवधि में बेदखल नहीं किये जा सकते थे । जब तक विशेष परिस्थितियों में अदालती कार्यवाही द्वारा ऐसा निर्णय न लिया जाये। इन समी के लिए अंग्रेजी शासन ने पहली बार प्रत्यक्षत: भूमि कब्जा के आधार पर जमीनों का सर्वे करके भूबंदोबस्त रिकार्ड (**लेण्ड रेवेन्यू सेटेलमेंट**

रिकार्ड) बनाने का निर्णय लिया। इस निर्णय से विशेष परिस्थितियों का निर्माण हुआ। इस कानून में जो बात महत्वपूर्ण है, वह यह कि 1840 ई. से जो अपनी भूमि पर काबिज है, उसे शासन द्वारा वाजिब काश्तकार मानकर उन्हें मालिक मकबूजा हक देने का था। पाठकों को याद होगा कि, सतनाम आदोलन से जिन भू-दासों ने जमीनों पर कब्जा किये थे, वह इस कानून से सरकारी तौर पर अधिकृत रूप से आदिम काश्तकार मने जाते | इससे सतनाम लोक चेतनाकारी तत्वों में खलबली मच गई। क्योंकि वे यह आश लगाए थे कि एक न एक दिन वे सतनामियों को बेदखल करके, फिर से भूदास बनायेंगे। लेकिन अंग्रेजी सरकार ने उनको मालिकाना हक को स्वीकार कर लिया तो फिर उन्हें बेदखल करना नामुमकिन हो जाएगा। वे अपनी आंखों से देख चुके थे कि, बड़े - बड़े राजाओं - महाराजाओं को परास्त कर (1857 गदर में) अंग्रेज विजयी हुए थे, और उनके राज में सूर्य कभी डुबता नहीं था। अर्थात दुनिया के सभी दिशाओं में अंग्रेजी हुकुमत थी। जब कमी रात होता था तो वहीं कहीं दिन हुए स्थान पर भी उनका राज होता था।

यहां पर इस बात का उल्लेख कर दें कि अंग्रेजी प्रशासन ने भू - बंदोबस्त के लिए जो नीति अपनाई थी और उसमें अधिकारियों को यह निर्देशित किया गया था कि, यदि कोई विवाद होता है तो स्थानीय तौर पर जनसमुदाय में मान्य प्रमुखों की राय - मसवरा से उचित निर्णय किया जावे । इसके तहत लोक प्रशासन के प्रमुख अधिकारीगण (ज्ञात हो कि उस समय के स्थानीय अधिकारी तहसीलदार, नायब तहसीलदार जिनका पद मूल भारतीय निवासियों के लिए सुरक्षित रखा जाता था और उनका ओहदा आज के कलेक्टर - कमिश्नर की तरह का था। कलेक्टरी व्यवस्था तो बाद में शुरू हुआ। गुरूबालकदास द्वारा किसी विवादित मामले में उचित निर्णय देने से उनकी स्थिति एक राजा - न्यायाधीश की तरह हो गयी थी। इसलिए आम जन उन्हें सम्मान से **‘ राजा गुरू '** कहते थे।

लोकदमनकारियों द्वारा सतनाम आन्दोलन को दमित करने, गुरू बालकदास की हत्या का षडयंत्र –

लोकदमनकारी सामंत व उनके बिचौलिए अपने हित साधने में गुरूबालकदास को बहुत प्रभावित करने की केशिश किये। उन्होंने गुरूबालकदास को यह भी प्रलोभन दिया कि, उनके लिए अधिकांश भूमि - संपत्ति की व्यवस्था वे कर सकते है। बशर्ते कि वे भूमि मामलों में अपनी सक्रियता हटा ले। इन सब पर गुरूबालकदास स्पष्ट तौर पर कहते कि, हमारे लोग अपनी संगठन - समाज की शक्ति से अपनी भूमि पर काबिज है और यह सिर्फ जमीन का टुकड़ा भर नहीं है। यह हमारी थाली में हमारी मेहनत से रखा हुआ रोटी है। यदि कोई हमारी रोटी छीनने की कोशिश करेगा तो हम यह नहीं होने देंगे।

इन स्थितियों में लोकदमनकारियों ने एक षडयंत्र रचा -

1. कि गुरूबालकदास को धोखे से उचित अवसर पर मार डाला जाय। इसके लिए सभी तरह के साधनों का साम , दाम , दंड , भेद का सहारा लिया गया | जैसा की , उनके आराध्य देव विष्णु ने वामन रूप में राजा बलि को षडयंत्र पूर्वक हत्या कर उनकी भूमि को हड़पा था।

2. गुरूबालकदास की हत्या के बाद कोई और सतनामी नीति सिध्दांत का व्यक्ति , इनका मुखिया न बन सके। इसलिए ऐसे उपयुक्त व्यक्ति को मुखिया बना दिया जाए जो हमारे इशारे पर हर काम करे ।

इस तरह बहुत व्यवस्थित तरीके से षडयंत्र को अंजाम दिया गया। चूंकि वे दिन दहाड़े आमने - सामने से गुरूबालकदास की हत्या नहीं कर सकते थे। इसके लिए वे औराबांधा (वर्तमान में मुंगेली से करीब 8-10 कि.मी. दूर स्थित ग्राम) में गुरू बालकदास की रावटी का आयोजन रखा गया था, वहां उनकी हत्या करने का षडयंत्र रचा गया। षडयंत्रकारियों ने उनकी हत्या में उत्तर भारत के उन छटे हुए हत्यारों - गुडों को यह कहकर बुलाया था कि, यहां आओ और काम को अंजाम दो। वहां तुम्हारे पास 1 डिसमील जमीन नहीं है, तो यहां आकर सफल हुए,

तो सैंकड़ो एकड़ जमीन के मालिक बनोगे। उनका यह संदेश कारगार रहा और सचमुच में वहां के बदमाशों ने यहां आकर गुरूबालकदास की हत्या को अंजाम देकर यहां के सतनामियों का दमन करके, सैकड़ों एकड़ जमीनों पर कब्जा कर शासकीय अधिकारियों की मिलीमगत से मालिक हो गए। समाज - संगठन में औराबांधा में रावटी आयोजित करने या न करने के प्रश्न पर बहुत विचार-विमर्श हुआ। क्योंकि उस स्थान पर पहले से ही सतनामी एवं सामंती तत्वों के बीच तनाव - तकरार की घटानाएं हो चुकी थी। लेकिन दुश्मन के भेदियों की घुसपैठ के कारण वहां जाने का तय हो गया। (उस समय के समाज संगठन इस षडयंत्र को मापने में असफल रहे और गुप्त भेदियो के झांसें में आकर बहुत बड़ी गलती कर बैठे।) वे वहां गए लेकिन भेदियों की चालाकी से रात्रि में अचानक हमला हुआ। रात के अंधेरे में सबकुछ इधर - उधर हुआ और गुरूबालकदास व उनके सुरक्षा दस्ता (इसमें भी भेदिए थे |) अपने बचाव में जितना हो सकता था वे लड़े। लेकिन षडयंत्रकारियों के सुनिश्चित हमले से वह बुरी तरह घायल हो गए । रात्रि में सभी लोग इधर - उधर होकर दूर स्थानों पर मिले । घायल अवस्था में गुरूबालकदास को लेकर भंडार की ओर रवाना हुए। लेकिन पूर्व से ही षडयंत्रकारियों के साथ मिले हुए, थोपे गए भंडार के कथित गुरूओं, मुखियाओं ने यह कहा कि, गुरूबालकदास औराबांधा में कुछ गलत किए होंगे इसलिए इसलिए मरे गये | हम इसमे साथ नही देंगे | (ऐसा अफवाह फैलाकर उन्हें भंडार में आने नही देने की पूर्व नियोजित षडयंत्र था) तब औराबांधा के आगे से भंडार जाने के रास्तें से अलग नवलपुर (जहां उनका ससुराल था और जहां सतनाम आदोलन का प्रमुख केंद्र था।) के रास्ते में आगे बढ़े। गुरूबालकदास घायलावस्था में नवलपुर से पहले के एक ग्राम - कोसा के पास ही उनकी मृत्यु हो गई। वहां से नवलपुर लेकर मृत देह का मिट्टी संस्कार किया गया। (GSS इस स्थान पर पिछले अनेक वर्षों से समाधि मेला का आयोजन 26 मार्च को प्रतिवर्ष किया जाता है। यह तिथी उनकी मृत्यु की तारीख 16,17 मार्च 1860 ई. - 16 मार्च की रात हमले से घायल एवं 17 मार्च मृत्यु - यह तारीख हिन्दी विश्वकोष व पुराने कैलेण्डर रिकार्ड से प्राप्त किया गया है)

इस घटना के बाद के दिनों में, जब लोगों को पता हुआ तो क्रोध/ग्लानी से कई तर की घटनाएं हुई। लेकिन षडयंत्र कारी सचेत व तैयार थे और सतनामीजन भ्रमित (उल्टी - सीधी अफवाहों के कारण) तात्कालिक सरकारी मशीनरी ने भी हत्यारों को पकड़ने में ढील दिखाई अंतत: इस घटना से सतनामियों में दो फांक हो गया। हत्यारे पकड़े नही जा सके। पहले में वे लोग थे, जो मूलत: सतनाम सिध्दान्तो के मानने वाले थे, लेकिन इसलिए क्षुब्ध थे कि, वहां जाने के लिए हम लोगों के मना (षडयंत्र की आशंका से) किया था। लेकिन समाज-भीतरघातियों ने गुरूबालकदास को मना लिया था। (यह गुरूबालकदास की रणनीतिक चूक ही माना जाएगा) दूसरे वे लोग थे जिन्हें। लोकदमनकारियों ने भीतरघात के लिए पुरस्कार स्वरूप गुरूगद्दी में बैठाए गए थे। जो भय, लालच से लोकदमनकारियों के पिट्ठू बन गए थे।

ऐसे लोगों के मानसपुत्र ढपोरशंखियों ने आज की तारीखों में इस घटनाक्रम का वस्तुगत विवेचना न कर जानबूझकर मैथोलाजी गढ़कर लिखते - पढ़ते हैं।

ऐसे लोगों के रचनाओं में से कुछ अंश को देखें, पढ़े समझे -

1. छ.ग.शासन से पुरस्कार प्राप्त इस लेखक को पढ़े '.अनहोनी होकर रहता है। राजपूतों ने लाठी, तब्बल, माला से उन पर प्रहार किया, वे गिर पड़े गेहू खेत में। राजपूत लोग उन्हें मृतक समझकर छोड़ भागे आधी रात को उन्हें होश आया, वे दर्द से कराहने लगे। कुछ श्रध्दालु संत सतनामी वहां उपस्थित थे। वे गुरूबालकदास को उठाकर भंडारपुरी के लिए चल पड़े। साथ ही एक संदेश वाहक भंडारपुरी गुरूघासीदास के पास आया। वे सारी घटना की जानकरी दी। संदेश वाहक ने बताया कि गुरूबालकदास आपसे अमृत मंगवाये हैं। तब गुरूघासीदास नये सफेद कपड़े में मिट्टी बांधकर मेज दिये। गुरूबालकदास की पालकी डोंगरिया शिवनाथ नदी के किनारे पहुंची थी। संदेश वाहक गुरूघासीदास को भेजे पोटली को दे दी ! गुरूबालकदास पोटली खोलकर देखा वे समझ गये कि पिताजी नाराज हैं, वे मिट्टी भेज दिये हैं, अब मैं भंडारपुरी नहीं जा सकता। वे अपने पंच भौतिक शरीर पर परदा

डाल लिया। डोंगरिया से उनकी अस्थीभंडार पूरी गयी | भंडारपुरी वासी उनकी काया को धरती की गोद में समाहित कर दिया |

पाठकगण इस लबडधोंधो लेखक के विचार की असलियत समझ गये होंगे की, कितनी बेशर्मी से गुरुघासीदास को जो 1850 में मृत्यु को प्राप्त हो गये थे, को सांय के 1860 ई. में इस काम के लिए जिन्दा कर दिए और साथ ही उन सभी आमजनों को झूठा साबित कर रहे हैं, जो कोसा में मृत्यु होने (वंहा आज भी उस तालाब किनारे गुरुबलाकदास जी का मठ / मन्दिर बना हुआ, जो उसकी मृत्यु का स्थान हैं |) नवलपुर के उस माटी को झूठा साबित कर दिए जहाँ गुरुबलाकदास का कफन दफन हुआ था | लोगो में भ्रम – डर फैलाने वे जंहा कही भी हो गुरुघासीदास को सशरीर जिन्दा करने का चमत्कार दिखाते हैं | इन लबडधोंधो के कई ऐसे लबडधोंधे भाई भी हैं , जिन पर गुरूघासीदास चढ़ता है और उस पर दान - दक्षिणा लेकर वे जिंदा रहते हैं।)

2. ऐसे ही कुछ कवि गायक है—जो खूब हिनहिना कर गाते हैं कि , गुरूबालकदास जिस खेत पर मारे गए वहां गुरूप्रताप-चमत्कार से फसल पैदा ही नहीं होता । अब इन गायकों को यह कौन बताए कि वहां तब से अब तक भरपूर फसल होता है । कहीं पर किसी के हत्या से कोई जमीन उपजाऊ हो या ना हो, इसका क्या सम्बन्ध हैं ? हाँ ! लेकिन गायकी बतंगी खूब लहलहाए यही इनका मकसद होता हैं |

3. कुछ अन्य लेखों में इस हत्याकांड को अंग्रेजों की साजि श बताया गया है। हालाँकि इस तथ्य के पीछे , लेखको ने , सतनामियो के ईसाईकरण आदि प्रयास से जोड़ने का प्रयास किया है | (यह प्रयास तत्कालीन घटनाओ को अन्य स्वार्थ वश ले जाना है) लेकिन जो भी हो, यह तो स्पष्ट है कि गुरुबालक दास की हत्या किसी अचानक एक्सीडेंट घटना नहीं है | यह पूरी तरह से सतनाम आन्दोलन को हर बिंदु पर प्रभुसत्ताधारी सिध्दांत – धर्म - रीति को चुनौती प्रस्तुत कर रहा था। उसे दमन करने के लिए शांत दिलोदिमाग से रचा गया षडयंत्र था। वे चाहते थे कि , हमारी प्रभुसत्ता के खिलाफ कहीं से कोई अवाज न उठे। इसे षडयंत्र को सफल बनाने अंग्रेजी प्रशासन से मिलीभगत कर समाजघातियों ने सतनामियों

की भूमि संपत्ति हड़पने को आतुर सामंती तत्वों (यह बाद की घटनाओं से प्रमाणित भी हुआ, जब भूमि बंदोबस्त कब्जा रिकार्ड दुरूस्त कराने सतनामियों की जमीनों पर जबरन अपना कब्जा बनाया - बताया) एवं उनके गुडों का सुनियोजित कार्य था।

गुरू बालकदास की हत्या के भीतरघाती

अब हम यहां समाजघाती घटनाओं को समझने का प्रयास करेंगे। गुरूबालकदास की हत्या के बाद समस्त सतनाम समाज - संगठन में गुस्सा व क्षोम व्याप्त हो गया। षडयंत्रकारी इन बातों को जानते थे, इसलिए हर उन जगहों पर भीतर घातियों की मदद से सतनाम समाज का संगठन का घोर दमन किया गया | अंग्रेजी प्रशासन एवम भीतरघातियो की गद्दारी से सतनाम दमन को सफल बना सके। भंडार में जिन लोगों को गुरूगद्दी पर बैठाया गया, उनके संबंध में आज भी बहुत सारी बातें की जाती है। चूंकि सतनाम आांदोलन व दमन का सिलेसिलेवार अभिलेखों का अभाव है। इसलिए ज्ञात से अज्ञात को जानने की गणितीय क्रिया से हम सच्चाई को समझ सकते है। पहले हम यह देखें कि भंडार में बैठाए गए गुरूओं (?) के सबंध में किस - किस तरह के मतवाद हैं हम इसे जानें और इसकी विवेचना भी करें कि वास्तविक सच्चाई क्या है?

जिन्हें गद्दी में बैठाया गया उनका नाम **आगरदास** था । इन्हें गुरूघासीदास का पुत्र बताया जाता है, लेकिन इसे बहुत लोग नहीं मानते। वे अन्य तरह के तर्क रखते हैं। इन्हीं से संबंधित सफुरा माता, पवारा माता आदि संबंधी मैथोलाजी है।

पहला मत - सफुरा माता एवं पवारा माता एक ही है। सफुरा माता को उनकी मृत्यु के बाद गुरूघासीदास ने अमृत देकर जिलाया और जब जिंदा हुई तो उनका नाम पवारा माता रखा गया |

इस मत की विवेचना (1) मैथोलाजी से किसी बात को छिपाया/भ्रमित किया जा रहे।

(2) किसी भी गीत में गुरूघासीदास की पत्नी का नाम सफुरा माता ही कहा जाता है, पवारा माता नहीं |

(3) गुरूघासीदास ने सफुरा माता को अमृत पिलाकर जिंदा किया, तो उनका नाम सुफरा ही होना चाहिए। इसका नाम पवारा क्यों?

(4) बहुत पहले गुरूघासीदास के चित्र बनाने वालों ने उनके अगल - बगल में दो स्त्रियों को बैठाए दिखाए हैं। दोनों के चित्र के नीचे सफुरा माता एवं पवारा माता लिखा गया है। (जैसे गणेश के चित्र में दो स्त्रियों को बैठे दिखाया जाता है।) यदि सफुरा माता व पवारा माता एक ही के नाम है तो दो लोगों का चित्र क्यों?

(5) इसलिए इस अनुरूप गुरूघासीदास की दो पत्नियां थी। जबकि सभी जानकार उनकी एक ही पत्नी होना स्वीकारते हैं |

दूसरा मत - 1. पवारा माता, सफुरा माता की बहन थी। पवारामाता की शादी कही अन्यत्र हुई थी। उनके बच्चे भी पैदा हुए लेकिन उनके पति की आकस्मिक मृत्यु हो जाने के बाद वे अपने बच्चों के साथ भंडारपुरी में अपने जीजा - दीदी के पास आकर रहने लगी थी। गुरूघासीदास ने उनके बच्चों को पुत्रवत स्नेह देकर उनकी परवरिस किया।

2. इस मत वाले अपने मत के पक्ष में यह भी कहते हैं कि, पवारा माता के ससुराल परिवार अन्य सतनामी परिवार से है। इसीलिए उनके परिवार का एक **' कनफूंका गुरू '** परिवार आज भी ग्राम - छेरकापुर, ब्लाक पलारी, जिला बलौदाबाजार में रहते हैं और अब भी इस कनफूंका गुरू परिवार को आगरदास के वर्तमान वंशज उन्हें **'गुरू'** के रूप में मानते है। यह सर्वज्ञात है कि, आज भी जिस परिवार से कन गुरू मानने - बनाने की परंपरा है उन्हें परम्परागत रूप से वंशज मी गुरू बनाते - मानते हैं। इस तरह आगरदास के वंशज कुल के लोग उसे अपना गुरू मानते हैं। इस तरह यह प्रमाणित होता है कि पवारा माता एवं उनके पति के परिवार के कनफूंका गुरू रहे हैं। गुरूघासीदास द्वारा किसी को कनफूंका गुरू बनाने का सवाल ही नहीं उठता। इस मत की विवेचना - इस मत को मानने वालों का यह तर्क सही जान पड़ता है क्योंकि यह आम परिवारिक - पंरपरा देखने में भी आता है कि दुखित -

बेसहारा स्थिति में परिजन एक-दूसरे को सहारा देते हैं। यह कोई बुरी-अनहोनी बात नहीं है। इसलिए पवारा माता व उनके संतान भंडार में रहते थे।

तीसरा मत - इस मत के अनुसार सफुरा माता की मृत्यु के बाद उनकी विधवा बहन पवारा माता को गुरूघासीदास ने चुड़ी पहनाकर अपनी पत्नी बनाया था और आगरदास तथा अन्य पवारा माता को पूर्व को मृत्यु प्राप्त पति को भी हो सकते हैं और गुरूघासीदास के भी हो सकते हैं।

इस मत की विवेचना - (1) इस मत को कुछ लोग स्वीकार नहीं करते और कुछ लोग नहीं करते। इस मत वाले कहते हैं कि, गुरूघासीदास की एक ही पत्नी थी। पवारा माता को उनके पुत्रों सहित गुरूघासीदास ने आश्रय दिया था। उनकी पत्नी होने की बात झूठ है।

(2) कुछ लोग परंपरागत चुड़ी प्रथा के आधार पर पवारा माता को गुरूघासीदास की चुड़िहाई पत्नी होने को स्वीकार करते हैं और आगरदास को गुरूघासीदास के पुत्र स्वीकारते हैं|

इन तीनों मतों के समर्थक व विरोधी कई हैं। लेकिन GVSS के शोध निष्कर्ष से पता चलता है कि पहला मत पूरी तरह सच को छिपाने मैथालाजी बनाकर पेश किया गया है। मृत्यु उपरांत अमृतपान कराकर जिंदा करने एवं उस पर भी दो पत्नियों का चित्र दिखाना आदि बातें शक - सुबहा पैदा करता है। दूसरा व तीसरा मत में से कोई सच है इसे आज की तारीख में सही कौन है. यह कहना / तय करना मुश्किल है। आखिरकार जो भी रहा हो, मृत्यु उपरांत किसी की निजी जिंदगी के मसले पर सवाल उठाया उपयुक्त नहीं होगा। चाहे वे आम इंसान हो या खास इंसान।

GSS की यह दृढ़ मान्यता है कि, सतनाम आन्दोलन के पक्ष - विपक्ष में किन लोगों ने क्या भूमिका अदा किए थे और आज भी कौन किसके पक्ष व विपक्ष में हैं, यह सामाजिक हित - अहित का सवाल है। इसीलिए इसी सामाजिक हित - अहित की बिन्दु पर चर्चा करना चाहिये|

यह तो निर्विवाद तथ्य है कि गुरू अमरदास, गुरू बालकदास व सुभद्रा आता इन तीनों ने जो सफुरामाता की संतानें थीं, सतनाम आंदोलन के लिए अपने अथक श्रम व प्राणों की आहुति भी दिए | अब पवारा माता की तरफ से आगरदास व अन्य जन गुरूघासीदास के पुत्र हो भी सकते हैं और नहीं भी। यहां पर उनकी वंश जन्म पर नहीं सामाजिक भूमिका पर चर्चा होना चाहिए। इसी आधार पर उनका मूल्यांकन हो । जन्मआधार पर कौन क्या है ? इसे न तो सतनाम सिध्दांत मानता और न ही इसकी कोई प्राथमिकता है। यह विचार करें कि, किसी डाक्टर का पुत्र यदि डाकू हो जाए तो डाक्टर से इलाज कराने वाला मरीज यह सोचकर कि, वह डाक्टर का पुत्र है। किसी डाकू से इलाज कराए, कोई भी नहीं कहेगा, न करेगा। ऐसा कोई भी नहीं कहेगा डॉक्टर व डाकू पिता - पुत्र होने पर, दोनों के हाथों धारदार हथियार होता है। एक मरीज के रोग को चाकू से काटकर उपचार करता है। दूसरा अपने हथियार से लोगों का गला काटकर लूटमार करता है।

गुरूबालकदास की हत्या के बाद भंडार से आगरदास को गुरूगद्दी पर बैठाया गया। उन्होंने गुरूबालकदास की हत्या व समकालीन परिस्थितियों में सतनाम समाज संगठन का साथ नहीं दिया |बल्कि सतनाम – संगठन की सर्वोच्च संस्था एवम उनकी सम्पति पर अपना कब्जा करने विविध समाजघाती कार्य किये । जिससे सतनामियों को घातक परिणाम भोगना पड़ा। सच जब प्रकट होता है तो बहुत प्रचंड परिणाम लाता है। आगरदास की वर्तमान वंशजों द्वारा अभी कुछ अरसा पूर्व एक दस्तावेज (यह दस्तावेज सत्य है या असत्य इसकी पुष्टि होना शेष है) को सार्वजनिक किया है , जिसमें लिखा है कि , आगरदास पिता घासीदास। चलिए यहां तक तो ठीक है। समझ में आता है। लेकिन इसी दस्तावेज में यह भी लिखा है कि , आगरदास संपत्ति के नम्बरदार (लोक अपभ्रंश में लम्बरदार) हैं |अब इस सफेद झूठ को कोई कैसे मानेगा |लम्बरदार परिवार के (माता - पिता की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार कानून व परंपरा में) सबसे बड़े पुत्र को मान्य किया जाता है। उदाहरणत: यदि कही संतानों में चार भाई हैं तो इनमें सबसे ज्येष्ठ पुत्र लम्बरदार होगा। यदि कही उनकी भी मृत्यु हो गई तो लम्बरदार उनका ज्येष्ठ पुत्र होता बाकी बचे तीन भाई लम्बरदार नहीं हिस्सेदार होता है। गुरूघासीदास के बड़े पुत्र अमरदास की मृत्यु , नि:संतान स्थिति में

गुरूघासीदास के जीवनकाल में ही हो गई थी। गुरूघासीदास की मृत्यु के बाद द्वितीय पुत्र गुरूबालकदास ही लम्बरदार होते और उनकी मृत्यु - हत्या के बाद उनके पुत्र साहेबदास लम्बरदार हुए। इस तरह आगरदास को गुरूघासीदास के पुत्र मान भी ले तो वे हिस्सेदार होंगे, लम्बरदार कैसे हुए ? यह एक बहुत बड़ा षडयंत्र का संकेत देता है।

इन्हीं सब बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि, आगरदास एवं उनके अन्य भाई. हम अब भी दोहराते हैं कि वे गुरूघासीदास के पुत्र हैं या नहीं. यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है कि, गुरुबालकदास की हत्या में समाजघाती कार्य किसने किया। कौन किसके इशारे समाज एकता आन्दोलन को लात मारकर , सम्पत्ति पर कब्ज़ा करने प्रयास क्र रहा था। अंतत: सतनामी समाज – संगठन गुरूबालकदास को पुत्र साहेबदास जो वास्तविक लम्बरदार था | भंडार में सम्पत्ति में दखल को मान्य कराने जी तोड़ प्रयास किया | यह सभी जानते हैं कि भंडार व संपूर्ण गांवों की संपतित्यों को दो भागों में (साहेबदास व आगरदास) दोनों के बीच बंटवारा किया गया। गुरूबालकदास की हत्या के बाद सतनाम आंदोलन से प्राप्त संपत्ति - साधना, गुरूद्वारा, जैतखाम को पारिवारिक सम्पत्ति में बदल दिया गया | जिसे बाद में कब्जा धारियों ने गिरवी – बिक्री आदि से नष्ट कर दिया। (इसकी चर्चा बाद के विषय प्रसंग में करेंगे।)

सतनाम आंदोलन को दमित करने के लिए लोक दमनकारी शुरू से ही विविध प्रयास करते रहे हैं। लेकिन सतनामियों की एकता - संगठन के सामने वे पूरी तरह वे सफल नही हो पा रहे थे। इतिहास प्रसिध्द बात है, कि जब तक संगठन - समाज में विश्वासघात करने वाले नहीं होते , उस संगठन को नहीं दबाया जा सकता | राम , रावण को मरने में तभी सफल हुए जब विभीषण ने विश्वासघात किया | लोकदमनकारी सिर्फ सीधे हमला नहीं करता, वह समय - प्रसंग स्थिति अनुसार विविध रणनीति बनाकर हमला करता है। दमन करना उनकी नियती है। इसी से वह जिंदा रहता तथा जीतता है। लोकदमनकारियों में यह खूबी कूट - कूट कर

भरी होती है। उनके चिंतक - मिशनरियों की इन खूबियों का दर्शन - पाठकगण तब से अब तक बखूबी कर सकते हैं।

ऐसे ही उनके एक मिशनरी – कविराय अपनों को कैसे ज्ञान दिए हैं, इसे देखें -

साई सत्य न मानिए, खलि शत्रु संगसार। दांव परे नहीं चुकिए, तुरंत डारिए मार।

तुरंत डारिये मार,नरद कच्ची कर दीजै। कच्ची होय तो होय, मारि जग में सुख लीजे।

कह गिरधर कविराय, जुगन जुग ते चलि आई। कितनहु मिलै धधाय, शत्रु को मारिय साई।

जाकी धन धरती हरी , ताहि न लीजै संग | जो संग राखी ही बने , तो करी राखि अपंग |

तो करि राख अपंग, फेर पनपे सो न कीजै। कपट रूप बतलाय, तासु को मन हर लीजै।|

कह गिरधर कविराय, खटक जैहे ना ताकी। कोटि दिलासा देव, लई धन धरती जाकी।

उक्त का अर्थ देने की आवश्यकता नहीं है।

गुनी पाठक इसके सभी रणनितियों को समझते होंगे और यह भी समझते होंगे कि यह भी कपट चाल में फंसने वाले भी हरा पाते हैं | वे समर्थ – जानकारों के सामने कपट चाल नहीं चला पाते । तभी तो थोड़े से अरबों - अंग्रेजों के सामने हारते रहने का कलकित इतिहास विद्यमान है और अपने राज - काज में थोड़े होकर भी बहुतेरों को कपट रूप से राज करते रहे है | तो इस तरह से सतनाम दमनकारीयों ने साम, दाम, दंड , भेद से सतनाम दमन किया गया |

जय सत   जय तत